शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भगत सिंह और आज का भारत

प्राप्तिः 27.05.2024
स्वीकृतः 25.06.2024

डॉ० अमिता
सहायक अध्यापिका
राजकीय हाईस्कूल नन्दापुरा, आगरा
ईमेलः *amitakumari0121@gmail.com*

37

सारांश

देश के क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास में भगत सिंह ने ही एक नये युग का सृजन किया था। भगत सिंह ने सबसे पहले समाजवाद के लक्ष्य का उद्घोष किया था। आगे चलकर वे राजनीति में समाजवाद और क्रान्ति के सबसे बडे प्रतीक बन गये। भगत सिंह कैसे क्रान्ति के इतने बडे प्रतीक बने? उन्हें इतना ज्ञान कहां से आया? इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है– गहन अध्ययन।

भगत सिंह भारत के महानतम देशभक्त तथा क्रान्तिकारी समाजवादियों में से एक थे। उनका पूर्णरूप से राजनीतिक जीवन 1926 से शुरू होता है। इसी वर्ष उन्होंने लाहौर में नौजवान भारत सभा की स्थापना की। इस सभा की स्थापना समाजवाद और धर्मनिपेक्षता के सिद्धान्तो के आधार पर की गयी थी। उन्होनें कहा कि जडता और निष्क्रियता से मनुष्य जाति की प्रगति रूक जाती है और उसमें गतिरोध आ जाता है। देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, जब एक ओर प्रतिक्रियावादी शक्तियों की ताकत बढ रही है और दूसरी ओर लोगों की समस्याएँ बढ़ रही हैं जिनका कोई हल हो नहीं रहा और चारों ओर धार्मिक कट्टरता पनप रही हैं तो भगत सिंह के उपरोक्त कथन की सार्थकता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

मुख्य बिन्दू

समाजवाद, मजदूर, क्रान्तिकारी, नास्तिक, मार्क्सवाद, साम्यवाद आदि।

शहीदे–आजम भगत सिंह देश के स्वाधीनता संघर्ष की क्रान्तिकारी धारा के महान चिन्तक थे। एक क्रान्तिकारी विचारक के रूप में भगत सिंह का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में एक अनुपम योगदान है। भगत सिंह का राजनीतिक जीवन काफी छोटा था लेकिन उन्होंने अपने वीरतापूर्ण कार्यों से स्वाधीनता आन्दोलन के लिये एक प्रकाश स्तम्भ एवं पथ प्रदर्शक का काम किया और एक विचारक एवं चिन्तक की भूमिका निभाई। उन्होंने जेल में भी चार पुस्तके व एक पर्चा 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' लिखा था। भगत सिंह ने अपनी राजनीतिक यात्रा एक विकासोन्मुख क्रान्तिकारी के रूप में तय की। भगत सिंह बचपन में अपने परिवार के प्रभाव से धार्मिक रूप से आर्य–समाजी थे, लेकिन उसके बाद उन्होंने नास्तिक बनकर सारे धार्मिक बन्धन तोड़ दिये। फिर असहयोग आन्दोलन के समय कांग्रेस

वालिंटियर (कार्यकर्ता) के रूप में राजनीति में आये। चौरी–चौरा संग्राम के बाद असहयोग आंदोलन वापस ले लिया गया इसलिये गांधी और गांधीवाद से मोह भंग होने के पश्चात वे अराजकतावादी बने। उसके बाद उन्होंने समाजवादी विचारों को भारत में स्थापित करने को अपना महत्त्वपूर्ण ध्येय घोषित किया। इसके बाद जेल की कोठरी में उन्होंने तत्कालीन विश्व के साहित्य का गहन अध्ययन किया और अन्त में अपना विश्वास मार्क्सवाद–लेनिनवाद में व्यक्त किया। इनके बौद्धिक एवं वैचारिक विकास में द्वारकादास पुस्तकालय का बहुत बड़ा योगदान रहा। यह पुस्तकालय लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित किया गया था और यह भगत सिंह घर बन गया था। इस तरह हम देखते है कि भगत सिंह की चिन्तन प्रक्रिया में कोई गतिरोध या ठहराव नहीं हैं।[1]

एक जोशीले नौजवान और नेशनल कॉलेज, लाहौर के पूर्व छात्र भगत सिंह ने जुझारू राष्ट्रीय आन्दोलन को विचारात्मक ढंग से आगे बढ़ाने के लिए मार्च 1926 में नौजवान भारत सभा का गठन किया था। इस काम में, भगतीचरण वोहरा, धन्वन्तरि, एहसान इलाही और अनेक दूसरे क्रान्तिकारी लोगों ने उनकी मदद की। रामकृष्ण और भगत सिंह इसके पहले अध्यक्ष और सचिव बने। लाला पिण्डी दास और लाला लालचन्द फलक जैसे वामपन्थी रूझान रखने वाले कांग्रेस नेता सभा के कामों से हमदर्दी रखते थे और उसे सहयोग भी देते थे।[2]

8 अप्रैल 1929 में भारतीय इतिहास का प्रसिद्ध असेम्बली बम काण्ड हुआ। इसमें 2 व्यक्ति भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त गिरफ्तार हुये। इस काण्ड के पीछे भी एक पृष्ठभूमि थी। 1927–28 में देश में मजदूर वर्ग तेजी के साथ संगठित हो रहा था। मजदूर वर्ग का यह संगठन अपनी प्रकृति में गरम विचार वाला, लड़ाकू और वर्ग चेतना फैलाने वाला था। उस समय भारत में कम्यूनिस्ट विचारधारा भी फैल रही थी। इसके बारे में जनवरी 1929 में वायसराय लार्ड इर्विन ने अपने भाषण में कहा था कि ''कम्यूनिष्ट विचारधारा के खुले प्रचार से चिंताजनक स्थिति पैदा हो गयी है।[3]

उस समय तक भगत सिंह समाजवाद का अच्छी तरह से अध्ययन कर चुके थे और वह यह समझ चुके थे कि मजदूरों और किसान वर्ग को साथ लिये बिना क्रान्ति सफल नहीं हो सकती है। क्योंकि उस समय ब्रिटिश सरकार पब्लिक सेफ्टी बिल द्वारा क्रान्तिकारियों का, और ट्रेड डिस्प्यूट बिल द्वारा मजदूरों का दमन करना चाहती थी। इसलिये इसके विरोध में भगत सिंह और बी.के. दत्त ने केन्द्रीय असेम्बली में 2 बम फेंके। भारतीय इतिहास मे विरोध प्रकट करने का यह एक नया प्रयोग था। इस तरह विरोध जताने की प्रेरणा भगत सिंह को फ्रांस के अराजकतावादी क्रान्तिकारी नेता बेलाँ के बयान से मिली थी जिसे उन्होंने अपने शैक्षिक जीवन में पढ़ा था और वे इससे बहुत अधिक प्रभावित हुये थे। तभी से उनके दिमाग में ये था कि मुझे भी कुछ इसी तरह का महत्वपूर्ण कार्य करना है। बेलाँ के शब्दों में – *उन्होंने असेम्बली में फेंके गये पर्चे में इस तरह लिखा था कि बहरों को सुनाने के लिये बम का धमाका जरूरी है।*[4]

भगत सिंह द्वारा असेम्बली में बम फेंकने के भी दो पहलू थे। पहले पहलू में क्रान्तिकारियों द्वारा ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी गयी कि तुम जनता के निर्णय के विरूद्ध शस्त्र शक्ति से शासन कर रहे हो इसलिए अब हम भारतीय भी उसका उत्तर शस्त्र शक्ति से देने को तैयार हैं। दूसरे पहलू में वैधानिक आन्दोलन द्वारा विदेशी ब्रिटिश सरकार का विरोध करने वाले राष्ट्रीय प्रतिनिधियों जिससे

कांग्रेस पार्टी प्रमुख थी उनको चेतावनी दी कि आप लोगों का वैधानिक विरोध निष्फल हैं क्योंकि आपके तीव्र विरोध के बावजूद भी दमनकारी कानून बनाये जाते हैं।[5]

भगत सिंह ने अपने उद्देश्यों को काफी खुले रूप में स्पष्ट किया ताकि आम भारतीय जनता उसके विचारों को जान सके और क्रान्तिकारियों को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करे उन्होंने कहा कि ''हमने असेम्बली में बम जरूर फेंके थे, लेकिन हमारा उद्देश्य किसी भी मानव की हत्या करना नहीं था क्योंकि हम मानव जीवन को बहुत पवित्र समझते हैं इसलिये उसका बहुत आदर करते हैं। हमारे बमों द्वारा अधिक क्षति का न होना कोई अनहोनी घटना नहीं थी, जैसा कि सरकारी अधिकारियों ने इसे बताया था बल्कि हमने अपने बमों को जानबूझकर खाली जगह पर ही फेंका था और अगर बमों में जोरदार पोटेशियम क्लोरेट और पिकरिक एसिड भरा होता तो इनसे बहुत अधिक क्षति हो सकती थी। यदि हम चाहते तो असेम्बली के बहुत महत्वपूर्ण व्यक्तियों को आसानी से निशाना बना सकते थे। लेकिन हमने ऐसा नहीं किया क्योंकि ऐसा करना हमारा उद्देश्य ही नहीं था।[6]

अन्त में भगत सिंह ने ब्रिटिश सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि– ''हम खुद को जानबूझकर गिरफ्तार कराकर ब्रिटिश सरकार को इतिहास का यह सबक बता देना चाहते हैं कि मुट्ठी भर आदमियों को मारकर आप किसी आदर्श को समाप्त नहीं कर सकते और ना ही दो व्यक्तियों को कुचलकर राष्ट्र को दबाया जा सकता है। आप सिर्फ व्यक्ति को मार सकते हैं उसके विचार, उसकी भावना को नहीं, विचार और भावना तो अजर एवं अमर है। भगत सिंह ने फ्रांस की क्रान्ति का उदाहरण देकर कहा कि परिचय चिन्ह (Letter Decatched) तथा फ्रांस की कुख्यात जेल बेस्टाइल जहां राजनीतिक कैदियों को घोर यातनायें दी जाती थी ये सब भी फ्रांस के क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने में समर्थ नहीं हुये थे। फांसी के फन्दे और साइबेरिया की सुरंगे रूसी क्रान्ति की आग को नहीं बुझा पायी थी, तो फिर क्या अध्यादेश और सेफ्टी बिल्स द्वारा ब्रिटिश सरकार भारत में आजादी की लौ को बुझा सकेंगे? सरकार के गुप्तचर विभाग द्वारा षड़यन्त्रों का पता लगाकर या मनगढ़ंत षड़यन्त्रों द्वारा नौजवनों को सजा देकर या एक महान आदर्श के स्वप्न से प्रेरित नवयुवकों को जेलों में ठूंसकर क्या क्रान्ति का पवित्र अभियान रोका जा सकता है? यदि हमारी इस चेतावनी की उपेक्षा नहीं की गयी तो यह मानव जीवन की हानि और व्यापक उत्पीड़न को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इस चेतावनी को देने का भार सबसे पहले हमने स्वंय अपने कंधों पर लिया और अपने कर्तव्य का पालन किया।[7]

भगत सिंह ने तत्कालीन विश्व के प्रसिद्ध दर्शनिकों कार्ल मार्क्स, बर्टेड रसल, आसम पेन, रार्बट सी बाकुनिन आदि का अध्ययन गहन किया था। ये सभी पूर्णतः नास्तिक थे। इस गहन अध्ययन के फलस्वरूप भगत सिंह भी नास्तिक हो गये थे। उन्होंने बाकुनिन की पुस्तक ''ईश्वर और राज्य'' तथा निरलम्ब स्वामी की ''सहजज्ञान'' का अध्ययन किया। इन पुस्तको का भगत सिंह पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और 1926 तक आते–आते भगत सिंह पूर्ण नास्तिक बन गये। उन्होंने अपने प्रसिद्ध एव लोकप्रिय लेख ''मैं नास्तिक क्यों हूँ'' में लिखा कि – 1926 के अन्त तक मैं इस बात पर पूर्ण विश्वास करने लगा कि इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सष्जन एवं पालन करने वाला कोई सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी परमात्मा नहीं है।[8]

क्रान्ति के बाद नया भारत किस तरह का होगा? इसके लिये शहीदे–आजम भगत सिंह ने पहले से ही सोच रखा था। इसका पता हमें उनके द्वारा विवाह के प्रश्न पर अपनी मां को लिखे गये पत्र से भी चलता है। जब भगत सिंह लाहौर के नेशनल कॉलेज में पढ़ रहे थे तो उनका परिवार उनकी शादी करना चाहता था लेकिन वे तो कुछ और ही चाहते थे। उन्होंने पत्र में लिखा था कि ''हमारा देश ब्रिटिश सरकार का गुलाम है और इस गुलामी के चलते भारतीयों को कभी सम्मान नहीं मिल सकता। इसलिये हमें सबसे पहले देश को पूर्णतः आजाद कराना है और उसके बाद हम एक नये भारत की स्थापना करेगें, जिसमें गरीबों के लिये झुग्गी झोपड़ियों की बजाय मकान होगें तथा कोई भी भूखा नंगा तथा कुपोषित नहीं रहेगा।'' भगत सिंह आजादी के बाद समाजवादी सिद्धान्तों के आधार पर किसानो और मजदूरों के लिए नये भारत का निर्माण करना चाहते थे। इसीलिये उन्होंने नौजवान भारत सभा की स्थापना समाजवादी सिद्धान्तों के आधार पर की थी, जिसमें मजदूर और fdl kukadksl Ekwkzvkt knhnsusdh ckr dghx;h FkkA[9]

भगत सिंह आजादी के बाद भारत में वर्गविहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे, क्योंकि उनके अनुसार समाज में संघर्ष का प्रमुख कारण वर्ग श्रेणी ही है। उनका मानना था कि जब समाज में कोई वर्ग ही नहीं रहेगा तो संघर्ष भी नहीं होगा। भगत सिंह राज्यविहीन समाज के भी पक्षधर थे।[10] भगत सिंह ने व्यक्ति के बारे में लिखा कि व्यक्ति आजाद पैदा होता है लेकिन समाज में आते ही वह हर तरह से बँध जाता है।''[11] भगत सिंह समाज में सभी तरह की समानता स्थापित करना चाहते थे चाहे वो राजनीतिक क्षेत्र हो या आर्थिक क्षेत्र में। भगत सिंह चाहते थे कि समाज में कोई भी न तो अधिक धनी हो और न ही कोई अधिक गरीब हो। व्यक्ति को समान श्रम के लिये सभी को समान वेतन ही मिलना चाहिये तभी श्रम और व्यक्ति दोनो को समान सम्मान मिलेगा।''[12]

शहीदे–आजम भगत सिंह के अनुसार स्वतंत्रता के बाद हमारे देश के भावी समाज में प्रत्येक व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। उनका कहना था कि भावी समाज में हिंसा नहीं रहेगी और उच्च सांस्कृतिक मूल्यों का सृजन होगा। इसमें मनुष्य यातनाओं से मुक्त होकर जीवन के सच्चे आनन्द का उपभोग करेगा। भगत सिंह की इस विचारधारा पर मशहूर क्रान्तिकारी ओर समाजवादी विचारक शिव वर्मा ने लिखा है कि ''भगत सिंह अपने जीवन के अन्तिम समय में मार्क्सवाद के काफी नज़दीक आ गये थे।''[13] भगत सिंह ने अपने मित्र सुखदेव के नाम पत्र में लिखा था कि –हम और तुम जीवित नहीं रहेगें, लेकिन फिर भी लोग हमें याद रखेगें, क्योंकि हमारा विश्वास है कि अन्त में मार्क्सवाद या साम्यवाद की जीत निश्चित है।[14]

भगत सिंह को एक विद्वान, महान चिन्तक और क्रान्तिकारी आन्दोलन का अद्वितीय नेता बनाने में, दूसरे शब्दों में छोटी सी उम्र में भगत सिंह को शहीदे आजम, सरदार भगत सिंह के रूप में विख्यात करने में तार्किकता और विवेकपूर्ण चिन्तन का विशेष योगदान रहा है; इसीलिए उनके विचारों एवं कार्यों में एक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक जीवन दर्शन उपलब्ध है।[15]

इतिहास का विद्यार्थी होने के कारण इतिहास हमसे माँग करता है कि हम अपनी सूझ–बूझ से बलिदानी भगत सिंह को समझें और संकीर्णता का शिकार होने से बचे और शहीद भगत सिंह का

यह कथन हमें गाँठ बाँध लेना चाहिए– ''पढ़ो, आलोचना करो, सोचो व इतिहास की सहायता से अपने विचार को प्रकट करो।''[16]

भगत सिंह की विचारधारा और उनकी क्रान्तिकारिता के ज्वलन्त प्रमाण जिन लेखों और दस्तावेजो में दर्ज हैं, वे आज भी पूर्ववत् प्रासंगिक है, क्योंकि इस आजादी के बाद भी भारतीय समाज 'उस' आजादी से वंचित है, जिसके लिए शहीदे आजम भगत सिंह और उनके असंख्य साथियों ने बलिदान दिया था। इसी कारण उनकी आज के भारत को पहले से अधिक आश्यकता है।

संदर्भ

1. सिंह, डॉ० रघुवीर. भगत सिंह और स्वतंत्रता संग्राम राधा प्रकाशन,1990 पृष्ठ **211.**
2. हबीब, एस. इरफान. बहरों को सुनाने के लिए राहुल फाउण्डेशन पृष्ठ **56.**
3. पामदत्त, रजनी. आज का भारत जन प्रकाशन पृष्ठ **422.**
4. सिंह, डॉ० रघुवीर. भगत सिंह और स्वतंत्रता संग्रामराधा प्रकाशन,पृष्ठ **121.**
5. यशपाल. सिंहवालोकन. भाग 1.राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ **170.**
6. Comrade, Ram Chandra. Ideology and Battle Cries of Indian Revolutinaories publisher Ram Chandra,the University of Michigan Pg. **105-106.**
7. Joint Statement of Bhagat Singh and Dutt in the Session Curt, Quoted from G.S. Deol Bhagat Singh, the Man and his Ideology. Pg. **105-106.**
8. सिंह, भगत. (1981). मैं नास्तिक क्यों हूँ. कानपुर राष्टीय पुस्तक न्यास (N.B.T)1981 पृष्ठ **9–10.**
9. Deol, G.S. Bhagat Singh- The Man and his Ideology Deep Prakashan,1928 Pg. **122.**
10. Singh, Bhagat. Diary. Pg. **31.**
11. Singh, Bhagat. Diary. Pg. **114.**
12. Singh, Bhagat. Diary. Pg. **116.**
13. Verma, Shiv. Foreward to Gopal Thakur"s Book-Bhagat Singh people Publishing House Bombay. Pg. **2.**
14. Deol, G.S. Sardar Bhagat Singh, The man and His Ideology Deep Prakashan, Pg. **131.**
15. सिंह, डॉ० रघुवीर. भगत सिंह और स्वतंत्रता संग्राम राधा प्रकाशन,पृष्ठ **243.**
16. चमनलाल, जगमोहन. भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज राजकमल प्रकाशन पृष्ठ **380.**